

मल्लिकार्जुन खरगे ने मोदी सरकार को घेरा, बोले- आज देश में अघोषित आपातकाल जैसी स्थिति

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर। कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने रविवार को केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार पर निशाना साधा। कर्नाटक के कलबुर्गी में पत्रकारों से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि देश में इस समय अघोषित आपातकाल जैसी हालात हैं। खरगे ने दावा किया कि आपातकाल के दौरान भी ट्रेन, फ्लाइट और शैक्षणिक संस्थानों का काम इस तरह प्रभावित नहीं हुआ था, जैसा आज हो रहा है। खरगे ने आरोप लगाया कि मौजूदा समय में सड़कें, बसें, ट्रेनें और इंटरनेट बंद किए जा रहे हैं। उन्होंने यह भी दावा किया कि मोबाइल फोन जब्त किए जा रहे हैं और युवाओं के साथ पुलिस सख्ती कर रही है। खरगे ने इन हालात के लिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह



और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जिम्मेदार ठहराया। समाचार एजेंसी एनआई के मुताबिक, खरगे ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री मोदी और अमित शाह लोकतंत्र को खत्म करना चाहते हैं। उन्होंने चुनाव में ईवीएम और वोटों में कथित गड़बड़ी का मुद्दा भी उठाया। खरगे ने कहा कि पहले ईवीएम को लेकर सवाल उठाए जाने पर लोग मजाक उड़ाते थे। लेकिन अब, उनके

बदला जाता है। खरगे ने दावा किया कि वोटों में कथित हेरफेर और चोरी से जुड़ी जानकारी चुनाव आयोग के सभी लोगों को नहीं थी। उनके मुताबिक, जब चुनाव आयोग के इन दो सदस्यों को इसकी जानकारी मिली, तो उन्होंने लिखित रूप से मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को इसकी सूचना दी। खरगे ने आरोप लगाया कि इस शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। खरगे ने कहा कि राहुल गांधी महाराष्ट्र, हरियाणा और कर्नाटक के अलंद तथा महादेवपुरा जैसे क्षेत्रों में कथित वोट चोरी का मुद्दा पहले से उठाते रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि राहुल गांधी ने बोरों पर विस्तार से समझाकर भी इन मामलों को सामने रखा, लेकिन चुनाव आयोग और केंद्र सरकार ने उनकी बात नहीं सुनी।

रिहाई के बाद सीजेपी नेताओं ने भरी हुंकार, देशभर में प्रदर्शन करने का किया ऐलान

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर। दिल्ली पुलिस की हिरासत से रिहा होते ही कॉन्ग्रेस जनता पार्टी (सीजेपी) के नेताओं ने कथित चुनावी गड़बड़ी के खिलाफ अपना आंदोलन देशभर में फैलाने का ऐलान किया। शनिवार को मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर जंतर-मंतर के पास जुटने की कोशिश कर रहे सैकड़ों लोगों को हिरासत में लिया गया था। रविवार को भी युवाओं के कई समूह जंतर-मंतर पहुंचने की कोशिश करते दिखे। सीजेपी के सह-संयोजक आशुतोष रांका ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, लड़ाई अभी शुरू हुई है। उन्होंने आगे कहा कि जब तक ज्ञानेश कुमार इस्तीफा नहीं देते, तब तक यह प्रदर्शन नहीं रुकेगा। सीजेपी नेता सौरव दास ने कहा कि प्रदर्शन सिर्फ दिल्ली तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरे देश में किया जाएगा। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारतीय जनता पार्टी पर भी निशाना साधा। दास ने आरोप लगाया



कि मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) का गलत इस्तेमाल किया जा रहा है। सीजेपी प्रमुख अभिजीत दीपके रिहाई के बाद अपनी दादी के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए महाराष्ट्र स्थित अपने गृह नगर रवाना हो गए थे। बाद में उन्होंने एक्स पर अपनी रिहाई की शर्तों को लेकर पोस्ट किया। उन्होंने लिखा, मैंने ऐसा कोई बॉन्ड साइन नहीं किया है, जिसमें कहा गया हो कि हम प्रदर्शन नहीं करेंगे। हम फिर से सड़कों पर उतरेंगे।

पुलिस के मुताबिक, शनिवार सुबह मुंबई से दिल्ली पहुंची फ्लाइट के उतरने के बाद आशुतोष रांका, सौरव दास और अभिजीत दीपके को विमान के अंदर से हिरासत में लिया गया था। इसके बाद उन्हें एहतियातन हिरासत में रखा गया और रविवार सुबह दिल्ली कैद में कार्यकारी मजिस्ट्रेट के अंदर से हिरासत में लिया गया था। हालांकि, मजिस्ट्रेट ने उन्हें एक साल तक शांति भंग नहीं करने की शर्त पर छोड़ा।

बीजेपी अपना दफ्तर चुनाव आयोग में खोल ले, अखिलेश यादव की दो टूक, गिरफ्तार छात्रों की रिहाई की मांग

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर। दिल्ली में हाल ही में हुए प्रदर्शन और छात्रों पर हुई कार्रवाई को लेकर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने केंद्र सरकार और चुनाव आयोग पर निशाना साधा है। उन्होंने गिरफ्तार किए गए छात्रों और युवाओं को तुरंत रिहा करने की मांग की। साथ ही, उन्होंने चुनाव आयोग से इस्तीफा देने को कहा।



अपना कार्यालय चुनाव आयोग के दफ्तर में ही खोल लेना चाहिए और वहीं से पार्टी चलानी चाहिए।

अखिलेश यादव ने उत्तर प्रदेश में कथित तौर पर गलत फॉर्म-7 भरे जाने के मामलों पर सवाल उठाए। उन्होंने पूछा कि ऐसे मामलों में क्या कार्रवाई हुई है। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग का काम मतदाता सूची में लोगों के नाम जोड़ना है, लेकिन आरोप है कि आयोग नाम जोड़ने के बजाय वोटरों के नाम काट रहा है। दिल्ली में प्रदर्शन के दौरान

छात्रों के साथ कथित सख्ती को लेकर अखिलेश यादव ने नाराजगी जताई। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदर्शनकारियों के साथ ऐसा व्यवहार करने वाले लोग हिटलर से सीखकर आए हैं। उन्होंने कहा कि हिटलर के सैनिक भी दूसरे राजनीतिक कार्यकर्ताओं के साथ इसी तरह का व्यवहार करते थे। अखिलेश ने प्रदर्शन के दौरान लड़कियों के साथ गलत व्यवहार किए जाने का आरोप भी लगाया। उन्होंने कहा कि इस मामले में शामिल बताए जा रहे लोग उत्तर प्रदेश के हैं। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसी खबरें हैं कि वे गाजियाबाद के रहने वाले हैं। गिरफ्तार छात्रों और युवाओं को रिहा करने की अपील करते हुए कहा कि जिस सरकार को सत्ता जाने का डर होता है, वह अन्याय करती है।

शैलपुत्री के प्राचीन मंदिर में भोर से ही भक्तों के पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया। दिन चढ़ने के साथ भीड़ बढ़ती गई और मंदिर के बाहर श्रद्धालुओं की लंबी कतार लग गई। मां की एक झलक पाने के लिए किसी के हाथ में लाल चुनरी थी तो कोई फूल-माला और नारियल लेकर अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहा था। प्रतीक्षा लंबी थी, लेकिन आस्था अडिग। हर जुबां पर मां का जयकारा और हर मन में सुख-समृद्धि की कामना थी।



नवरात्र के प्रथम दिन मां शैलपुत्री के दर्शन के साथ काशी में नौ दिनों तक चलने वाली शक्ति उपासना का विधिवत आगाज हुआ। मंदिर परिसर और आसपास का क्षेत्र घंट-घड़ियाल की ध्वनि तथा देवी की जयकारों से भक्तिमय हो उठा। श्रद्धालुओं ने मां के चरणों में शीश नवाकर परिवार की खुशहाली, आरोप्य और जीवन में सुख-शांति की प्रार्थना की। मान्यता है कि नवरात्र के पहले दिन मां शैलपुत्री की आराधना से साधना का शुभारंभ होता है और भक्त नौ दिनों तक चलने वाले व्रत-पूजन का संकल्प लेते हैं।

दर्शन की आस में घंटों कतार में खड़े रहे भक्त: अलईपुर स्थित मां शैलपुत्री मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ सुबह से ही बढ़ने लगी थी। दर्शन के लिए मंदिर के बाहर लंबी कतार लगी रही। भीड़ का आलम यह था कि श्रद्धालुओं को अपनी बारी आने के लिए घंटों इंतजार करना पड़ा। स्थानीय समाचार रिपोर्टों के मुताबिक, कतार करीब एक किलोमीटर तक पहुंच गई थी। मंगला आरती के बाद दर्शन-पूजन शुरू हुआ तो भक्तों का उत्साह देखते ही बन रहा था। दूर-दराज के इलाकों से भी लोग मां के दरबार में पहुंचे।

लंबे इंतजार के बावजूद भक्तों की आस्था में कमी नहीं दिखी। कोई हाथ जोड़कर मां का ध्यान करता रहा तो कोई मन ही मन देवी मंत्रों का जाप करता रहा। महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों के साथ पहुंचे परिवारों के लिए दर्शन की प्रतीक्षा धैर्य की परीक्षा भी बनो। जैसे-जैसे भक्त गर्भगृह के निकट पहुंचते, मां के दर्शन की उत्सुकता बढ़ती जाती। कुछ क्षणों के दर्शन के बाद श्रद्धालु प्रसाद लेकर दशरथ निकलते और दूसरे भक्तों को रास्ता देते दिखाई दिए।

इंडिगो की फ्लाइट में लगी आग, दिल्ली से चेन्नई जा रहे विमान की हैदराबाद में सुरक्षित लैंडिंग

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर। दिल्ली से चेन्नई जा रही इंडिगो की एक फ्लाइट में रविवार को उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब विमान में सामान रखने की जगह से धुआं निकलने लगा और आग लग गई। शुरूआती जानकारी के मुताबिक, एक खराब पावर बैंक की वजह से यह घटना हुई। इसके बाद विमान को हैदराबाद की ओर मोड़ दिया गया, जहां उसने सुरक्षित लैंडिंग की। सभी यात्री और चालक दल के सदस्य सुरक्षित हैं।



इस घटना का एक वीडियो सामने आया है, जिसे विमान में मौजूद एक यात्री ने अपने मोबाइल फोन से रिकॉर्ड किया। वीडियो में कुछ यात्री अपने बैग से आग बुझाने की कोशिश करते दिखाई दे रहे हैं। विमान के केबिन क्रू ने अग्निशामक यंत्रों की मदद से आग पर काबू पाया। फ्लाइट संख्या 6E6115

सरुदी-पाकिस्तान रक्षा समझौते से भड़का ईरान; बोला- यमन में हस्तक्षेप बंद करो, वर्ना भुगतने पड़ेंगे गंभीर परिणाम

तेहरान, 11 अक्टूबर। सरुदी अरब, पाकिस्तान और तुर्किये के बीच रक्षा समझौते को लेकर पश्चिम एशिया में तनाव बढ़ता दिखाई दे रहा है। ईरान ने इस त्रिपक्षीय समझौते की आलोचना करते हुए चेतावनी दी है कि यमन में हस्तक्षेप के क्षेत्रीय सुरक्षा पर अवांछित परिणाम हो सकते हैं। तेहरान ने खास तौर पर पाकिस्तान की भूमिका पर सवाल उठाए हैं। ईरान इंटरनेशनल की

रिपोर्ट के अनुसार, सरुदी अरब की आधारभूत संरचनाओं पर हूती मिसाइल और ड्रोन हमलों में तेजी के बाद यह समझौता पांच अक्टूबर को परिचालन चरण में पहुंचा। पाकिस्तान और तुर्किये ने सरुदी अरब की सहायता के लिए कदम उठाना शुरू करने की बात कही है। ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बघाई से जब उन खबरों के बारे में पूछा गया कि

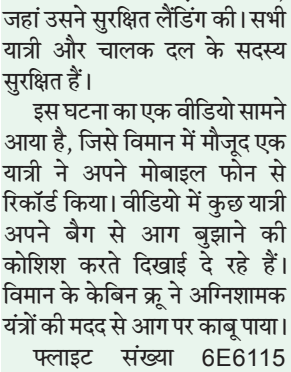
हजारों पाकिस्तानी सैनिकों को सरुदी अरब में तैनात किया जा सकता है, तो उन्होंने कहा कि उन्होंने भी ऐसी अटकलें सुनी हैं और उम्मीद करते हैं कि ये सही न हों। बघाई ने कहा कि क्षेत्र के देश जानते हैं कि यमन के मामले में किसी भी तरह का हस्तक्षेप पूरे क्षेत्र के लिए अवांछित परिणाम पैदा कर सकता है। उन्होंने उम्मीद जताई कि मक्का

समझौते जैसे रक्षा गठबंधनों का इस्तेमाल मुस्लिम समुदाय के हितों और कल्याण के खिलाफ नहीं किया जाएगा। हालांकि, उपलब्ध रिपोर्ट में पाकिस्तानी सैनिकों की बड़े पैमाने पर तैनाती की पुष्टि नहीं की गई है। फिलहाल यह मामला संभावित तैनाती से जुड़ी खबरों और ईरान की प्रतिक्रिया के रूप में सामने आया है। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने समझौते का सीधे नाम लिए बिना पड़ोसी देशों से आत्मनिर्भरता और सच्चे भाईचारे पर आधारित नीति अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने यह भी कहा कि इस तरह के समझौते ईरान की नीतियों को सीमित नहीं कर सकते। ईरान के कुछ सांसदों ने भी रक्षा समझौते की उपयोगिता पर सवाल उठाए हैं। संसद की राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति समिति के सदस्य अहमद बख्शावेश ने इसे केवल कागजी और राजनीतिक समझौता बताया।



इसी समिति के एक अन्य सदस्य इब्राहिम रेजाई ने सवाल किया कि क्या पाकिस्तान और तुर्किये के साथ

खिलाफ युद्ध में सरुदी अरब के साथ खड़ा होता है, तो उसे अब मध्यस्थ के बजाय क्षेत्रीय संघर्ष में शामिल पक्षकार के रूप में देखा जाना चाहिए। ईरानी सरकारी मीडिया ने भी रक्षा समझौते के परिचालन चरण में पहुंचने पर आलोचनात्मक रिपोर्टें प्रकाशित की हैं। इनमें हूती अधिकारियों की उन चेतावनियों की भी प्रमुखता दी गई है, जो तुर्किये और पाकिस्तान को लेकर दी गई थीं। ईरान की समाचार एजेंसी तन्सीम ने इस घटनाक्रम को तुर्किये और पाकिस्तान के सरुदी अरब के साथ यमन के खिलाफ युद्ध में शामिल होने के रूप में पेश किया।



TIWARI'S SARASWATI CLASSES
Since 1992
Parents' First Choice for 34+ Years
Prof. Dr. Dayanand Tiwari
Founder & Academic Director

ADMISSIONS OPEN
9th | 10th | 11th | 12th SCIENCE
NEET | JEE | MHT-CET
10 DAYS FREE DEMO
Attend Classes • Experience Our Teaching
Take Admission After Satisfaction
(No Hidden Conditions)

- ✓ 34+ Years of Academic Excellence
- ✓ Experienced & Dedicated Faculty
- ✓ Personal Attention
- ✓ Printed Notes & Regular Tests
- ✓ Strong Foundation for Boards & Competitive Exams

♥ Santacruz Branch
101 Sai Chambers,
Opp. Santacruz Railway Station (East),
Near Depot, Santacruz (E), Mumbai - 400055

♥ Sion Branch
Opp. SIES College (Old),
Near Gurusripa Hotel,
Sion (West), Mumbai

Limited Seats / Small Batch Size
CALL NOW:
7738007373

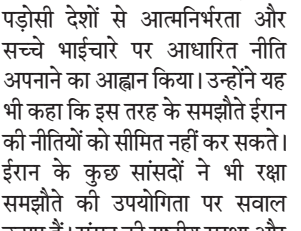


DAKS REHAB CENTRE
(PARALYSIS PHYSIOTHERAPY CENTER AND OLD AGE HOME)
Contact us: 9820519851

विलडिंग नंबर 3, फ्लॉट नंबर 3, आदर्श घरकुल सोसायटी सायन कोलीवाडा जीटीवी नगर मुंबई-37

- * Stroke/Paralysis/Complete Rehab Centre
- * बाहर से आये रोगी और उनके परिजनो के ठहरने कि व्यवस्था
- * वृद्ध लोगों के लिए रहने की सुविधा उपलब्ध
- * DM/HT/THYROID इन सब से कैसे बचें
- * NGO में मिलनेवाली सहायता को लोगों में देना
- * चिकित्सा उपकरणो को किराये और बिक्री सुविधा उपलब्ध
- * एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध
- * पोस्ट ऑपरेटिव रिहैब सेंटर
- * मरीजों के लिए घर पर 12 और 24 घंटे जीडीए परिचारक
- * विशेषज्ञ डॉक्टरों से ऑनलाइन और ऑफलाइन परामर्श की सुविधा उपलब्ध
- * मासिक ईएमआई के आधार पर व्यक्तियों, परिवारो और माता-पिता के लिए स्वास्थ्य निती की चिकित्सा सुविधा उपलब्ध





Multi Solutions

WHAT WE DO ?

COMPUTER & CCTV

- Laptop, Desktop, CCTV, Sales Service & Rental
- Networking
- Software Installation
- Data Recovery
- Antivirus

SMART AUTOMATION

- Automation
- Biometric
- Smart Home App Control
- All Type of Electric Work

Shop No13, First Floor, Zahoor Nagar, Mustafa Market, Near Behmani Hotel, Kherani Road, Sakinaka, Andheri (E), Mumbai - 400072.

Mithun Prajapati
+91 9220 555 717

मृत्यु की मुस्कान से मोक्ष की ओर: श्रीमती कान्तादेवी बोथरा की सागरी संथारा



-ललित गर्ग

जैन धर्म की आध्यात्मिक परंपरा त्याग, तपस्या, संयम, आत्मजागरण और वैराग्य की ऐसी गौरवशाली परंपरा है, जिसमें जीवन की सार्थकता केवल जीने में नहीं, बल्कि जीवन के अंतिम क्षणों को भी सजगता, समता और आत्मशुद्धि से परिपूर्ण बनाने में निहित है। इस परंपरा में संथारा अथवा संलेखना एक ऐसी विशिष्ट आध्यात्मिक साधना है, जो मनुष्य को देह की सीमाओं से ऊपर उठकर आत्मस्वरूप के चिंतन की प्रेरणा देती है। जैन धर्म में अनेक आचार्यों, मुनियों और साध्वियों ने अपनी तपस्या, त्याग और समाधिमरण से इस परंपरा को समृद्ध किया है। वहीं श्रावक-श्राविकाओं ने भी अपने संयमित जीवन और साधनामय अंतिम यात्रा से यह सिद्ध किया है कि आध्यात्मिक उत्कर्ष केवल मुनि-जीवन तक सीमित नहीं, बल्कि श्रद्धा, विवेक और आत्मानुशासन से गृहस्थ जीवन में भी संभव है। इसी पवित्र परंपरा का एक भावपूर्ण कड़ई है दिल्ली और नोएडा के प्रतिष्ठित बोथरा परिवार की मातृशक्ति श्रीमती कान्तादेवी बोथरा, धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री पूनमचंदजी बोथरा, जिन्होंने 5 अक्टूबर को प्रातः 8 बजकर 28 मिनट पर सागरी संथारा के माध्यम से समाधिमरण प्राप्त किया। उनका यह महाप्रयाण परिवार के लिए अपूरणीय वियोग का प्रसंग है, किंतु आध्यात्मिक दृष्टि से उनके धर्ममय जीवन, श्रद्धा और साधना का स्मरण करने का अवसर भी है। उनका जीवन हमें यह समझने की प्रेरणा देता है कि मनुष्य की वास्तविक महानता उसके सांसारिक वैभव में नहीं, बल्कि उसकी आंतरिक निर्मलता, धार्मिक निष्ठा, संयम और आत्मकल्याण की भावना में निहित होती है। जैन दर्शन में संथारा को सामान्य मृत्यु को घटना के रूप में नहीं, बल्कि विशिष्ट आध्यात्मिक भावभूमि में समझा जाता है। संलेखना का मूल भाव है—कषायों को क्षीण करना, राग-द्वेष को कम करना, मोह-ममता के बंधनों को शिथिल करना और जीवन के अंतिम चरण में समता एवं सजगता का विकास करना। यह साधना बाहरी त्याग से अधिक आंतरिक रूपांतरण की प्रक्रिया है। इसमें शरीर के प्रति अनावश्यक आसक्ति से ऊपर उठते हुए आत्मा के स्वरूप, कर्मबंधनों और जीवन की अनित्यता का चिंतन महत्वपूर्ण होता है। सागरी संथारा इसी व्यापक साधना-परंपरा से जुड़ा एक विशिष्ट प्रसंग है। इसकी आध्यात्मिक गरिमा को समझने के लिए उसके पीछे निहित विवेक, वैराग्य, आत्मस्वीकृति और धार्मिक मार्गदर्शन के महत्त्व को समझना आवश्यक है। यह किसी क्षणिक आवेग, निराशा अथवा जीवन से पलायन की भावना का नाम नहीं, बल्कि जैन परंपरा में वर्णित आत्मसंयम और समाधि की भावना से जुड़ा विषय है। इसकी सार्थकता बाहरी प्रदर्शन में नहीं, बल्कि साधक की आंतरिक सजगता, समता और कषायमुक्ति के प्रयास में देखी जाती है। जैन दर्शन हमें सिखाता है कि जीवन और मृत्यु दोनों अनित्य हैं। शरीर परिवर्तनशील है, जबकि आत्मा को जैन दर्शन में स्वतंत्र, चेतन और शाश्वत तत्त्व माना गया है। इस दृष्टि से मृत्यु का चिंतन वय उत्पन्न करने के लिए नहीं, बल्कि जीवन को अधिक विवेकपूर्ण, करुणामय और संयमित बनाने के लिए है। संथारा की आध्यात्मिक अवधारणा भी इसी आत्मचिंतन की ओर प्रेरित करती है। श्रीमती कान्तादेवी बोथरा की साधनामय जीवनयात्रा का स्मरण करते हुए यही भावना जागृत होती है कि धर्म का वास्तविक मूल्य तभी है, जब वह जीवन के व्यवहार से लेकर अंतिम समय तक मनुष्य को समता, शांति और आत्मावलोकन की प्रेरणा देता रहे।

श्रीमती कान्तादेवी बोथरा केवल एक परिवार की माता नहीं थीं, बल्कि संस्कारों, धार्मिक आस्था और पारिवारिक एकता की संवाहिका थीं। भारतीय संस्कृति में मां को प्रथम गुरु कहा गया है, क्योंकि वही बच्चे के भीतर श्रद्धा, करुणा, अनुशासन, सेवा और संयम के बीज बोती हैं। मां का व्यक्तित्व परिवार के जीवन में उस अदृश्य शक्ति की तरह कार्य करता है, जो पीढ़ियों को जोड़ती है और कठिन समय में भी उन्हें अपने मूल्यों से विचलित नहीं होने देती। स्वर्गीय श्री पूनमचंदजी बोथरा का परिवार बोदासर, दिल्ली और नोएडा में अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा, धार्मिक निष्ठा और संघसेवा के लिए जाना जाता है। इस परिवार की विशेष पहचान तेरापंथ धर्मसंघ के प्रति समर्पण, आचार्यों के प्रति श्रद्धा और सामाजिक दायित्वों के निर्वहन में रही है। परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ और वर्तमान युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रति परिवार की गुरु-भक्ति और संघनिष्ठा इसकी गौरवशाली परंपरा के महत्वपूर्ण आधार रहे हैं। इस परंपरा को आगे बढ़ाने में माताजी के संस्कारों की भूमिका को विस्मृत नहीं किया जा सकता। किसी परिवार की वास्तविक संपन्नता उसकी धन-संपदा से नहीं, बल्कि उसके सदस्यों के चरित्र, सेवा-भाव और नैतिक प्रतिबद्धता से मापी जाती है। मां जब अपने बच्चों को धर्म के प्रति श्रद्धा, समाज के प्रति संवेदना और गुरु के प्रति समर्पण का संस्कार देती है, तब वह संघसेवा की परंपरा को निरमण नहीं करती, बल्कि समाज की भावी दिशा को भी प्रभावित करती है। मां शरीर से विदा हो सकती है, लेकिन उसके दिए संस्कार कभी विदा नहीं होते। उसकी सीख सतारों के निर्माण में, उसकी प्रार्थना उनके संकल्पों में और उसका स्नेह उनके व्यवहार में जीवित रहता है। सचमुच, मां दूर नहीं जाती; वह स्मृतियों में संदेह, संस्कारों में शक्ति और धड़कनों में प्रार्थना बनकर बस जाती है। श्रीमती कान्तादेवी बोथरा की जीवन-साधना का सबसे महत्वपूर्ण संदेश भी यही है कि धर्म केवल पूजा-पाठ का विषय नहीं, बल्कि जीवन को मानवीय, संयमित और मूल्यनिष्ठ बनाने की सतत प्रक्रिया है। स्वर्गीय श्री पूनमचंदजी बोथरा की गुरु-भक्ति, शासन-भक्ति और संघसेवा की परंपरा को उनके परिवार ने निरंतर आगे बढ़ाया है। श्री बजरंगजी बोथरा और श्री लक्ष्मीपतजी बोथरा ने अपनी सामाजिक सक्रियता, धार्मिक निष्ठा और सेवा-समर्पण से इस परंपरा को नई ऊंचाइयां प्रदान की हैं। उनके कार्य इस बात का उदाहरण हैं कि सच्ची गुरु-भक्ति केवल श्रद्धा व्यक्त करने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह सेवा, उत्तरदायित्व और सामूहिक कल्याण के कार्यों में समाहित होती है। वर्ष 2027 में परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाधमणजी के दिल्ली चार्तुमास तथा वर्ष 2028 के मयादां महोत्सव की व्यवस्था समिति में श्री बजरंगजी बोथरा वरिष्ठ उपाध्यक्ष के रूप में महत्वपूर्ण दायित्व निभा रहे हैं। इसी प्रकार शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की स्मृति में महारौली में निर्मित वात्सल्य पीठ के निर्माण में श्री लक्ष्मीपतजी बोथरा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन कार्यों में उनकी सहभागिता केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि उस धार्मिक विरासत का विस्तार है, जिसमें सेवा को साधना और समर्पण को धर्म का व्यावहारिक स्वरूप माना जाता है। माताजी के समाधिमरण के पश्चात इन दायित्वों का महत्त्व और बढ़ जाता है। यह समय परिवार के लिए अपनी भावनाओं को धर्मरूप संकल्प में बदलने का है। गुरुसेवा, संघसेवा और समाजसेवा के माध्यम से माताजी द्वारा पोषित संस्कारों को आगे बढ़ाना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि का एक महत्वपूर्ण रूप हो सकता है। जब किसी मां की संतानों का जीवन सेवा और सदाचार की दिशा में आगे बढ़ता है, तब उससे संस्कार परिवार की सीमाओं से निकलकर व्यापक समाज की घरोहर बन जाते हैं। मृत्यु जीवन का ऐसा सत्य है, जिसे मनुष्य जानते हुए भी प्रायः स्वीकार नहीं करना चाहता। वह संसार के निर्माण में जीवन लगा देता है, लेकिन जीवन की अनिवार्य परिणति के विषय में विचार करने से बचता है। जैन दर्शन इस प्रवृत्ति के स्थान पर गारुक्तता, अनित्यता-बोध और आधुनिकता का मार्ग प्रस्तुत करता है। मृत्यु का स्मरण जीवन के प्रति उदासीन होने के लिए नहीं, बल्कि प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करने के लिए है। जैन आचार-विचार में राग और द्वेष को आत्मिक अशांति के प्रमुख कारक माना गया है। मनुष्य जितना अधिक मोह, अहंकार, लोभ और प्रतिशोध में उलझता है, उतना ही अपने भीतर की शांति से दूर होता जाता है। इसके विपरीत, क्षमा, विनम्रता, अपरिग्रह और समता उसे आंतरिक स्वतंत्रता की ओर ले जाते हैं। यही वे मूल्य हैं, जिन्की प्रासंगिकता किसी एक धार्मिक समुदाय तक सीमित नहीं है।

श्रीमती कान्तादेवी बोथरा की स्मृति में हमें यही संकल्प ग्रहण करना चाहिए कि हम जीवन रहते अपने संकेतों को मधुर बनाएं, मन में संचित कुटुंबा को दूर करें, अपने व्यवहार में करुणा लाएं और अपने दायित्वों को ईमानदारी से निभाएं। यदि मृत्यु का बोध हमें जीवन के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है, तो वह बोध सार्थक है। यदि धर्म हमें दूसरों के दुःख को समझना और उनके प्रति सहानुभूति रखना सिखाता है, तो वही धर्म जीवन में जीवंत होता है। संथारा और समाधिमरण की चर्चा करते समय यह भी आवश्यक है कि हम इस विषय की आध्यात्मिक गंभीरता और व्यक्तिगत संवेदनशीलता को समझें। ऐसी साधना का मूल्यांकन श्रद्धा के साथ-साथ समुचित धार्मिक मार्गदर्शन, व्यक्ति की सजगता और उसकी परिस्थितियों के संदर्भ में होना चाहिए। इसे आम लोगों के लिए मृत्यु का अनुकरणियक विवेक मानने के बजाय आत्मसंयम, वैराग्य, क्षमा और समता जैसे जीवनमूल्यों की प्रेरणा के रूप में ग्रहण करना अधिक सार्थक है। आध्यात्मिकता का उद्देश्य जीवन के प्रति जिम्मेदारी से विमुक्त होना नहीं, बल्कि जीवन को अधिक जागरूक और मूल्यवान बनाने का

श्रीमती कान्तादेवी बोथरा का समाधिमरण उनके परिवार और परिचितों के लिए गहन भावनात्मक क्षण है। मां का वियोग ऐसा रिक्त स्थान छोड़ता है, जिसकी भरपाई संसार की कोई उपलब्धि नहीं कर सकती। फिर भी भारतीय और जैन आध्यात्मिक परंपरा दुःख के बीच समता, स्मृति के बीच कृतज्ञता और वियोग के बीच आत्मबल खोजने की प्रेरणा देती है। समता का अर्थ अंसुओं को रोकना या संवेदनाओं को दबाना नहीं, बल्कि दुःख को स्वीकार करते हुए स्वयं को विवेक और धर्म से जोड़ना है। जीवन की अंतिम यात्रा को लेकर जैन दर्शन हमें आत्मा, कर्म और मुक्ति के गहन प्रश्नों पर विचार करने की प्रेरणा देता है। मोक्ष की यात्रा केवल अंतिम क्षणों में नहीं आरंभ होती; उसका आधार जीवन भर के समग्र निर्वहन, सम्यक् आचरण, संयम और कषायों को कम करने के प्रयासों में निर्मित होता है। इस दृष्टि से किसी साधक की आध्यात्मिक विरासत का सम्मान तभी पूर्ण होता है, जब उसके जीवन से प्रेरित होकर हम अपने वर्तमान को अधिक निर्मल बनाएं।

उत्तर प्रदेश में नामांकन की चुनौतियां, 'अयोध्या चैलेंज' और राजनैतिक भविष्य का शंखनाद



अशोक भाटिया

भारतीय राजनीति का यह एक सर्वमान्य और समय-सिद्ध सिद्धांत है कि दिल्ली का रास्ता लखनऊ के गलियारों से होकर ही गुजरता है। उत्तर प्रदेश न केवल देश का सबसे बड़ा राज्य है, बल्कि यह वह राजनैतिक कुरुक्षेत्र भी है जहां राष्ट्रीय स्तर के बड़े-बड़े सियासी सू्रमाओं का भाग्य तय होता है। वर्ष 2026 के इस उत्तरार्ध में कदम रखते ही प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर सरगमियां अपने चरम पर पहुंच चुकी हैं और संपूर्ण राज्य एक बार फिर एक बड़े लोकतांत्रिक उत्सव और उसकी जटिलताओं के मुहाने पर खड़ा है। किसी भी चुनाव प्रक्रिया का सबसे पहला, महत्वपूर्ण और प्रशासनिक रूप से संवेदनशील पड़ाव नामांकन होता है, जो केवल एक कानूनी या प्रशासनिक औपचारिकता मात्र नहीं है, बल्कि यह किसी भी राजनैतिक दल की सांगठनिक शक्ति, आंतरिक अनुशासन और जमीनी रणनीति का कलमस टेस्ट है। इस प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियां न केवल चुनाव आयोग और प्रशासन के धैर्य की परीक्षा लेती हैं, बल्कि यह विभिन्न राजनैतिक दलों के अस्तित्व और उनकी साख से भी जुड़ी होती हैं। इस बार, यह नामांकन प्रक्रिया सिर्फ कागजी कार्यवाहियों तक सीमित नहीं है, बल्कि सूबे के दो सबसे बड़े दिग्गजों—मुख्यमंत्री योगी

आदित्यनाथ और समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव—के बीच सीधे 'नामांकन चैलेंज' के रूप में तब्दील हो चुकी है, जिसने उत्तर प्रदेश की सियासत में एक अभूतपूर्व भूचाल ला दिया है।

इस राजनैतिक रस्साकशी की शुरुआत तब हुई जब समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने अयोध्या का दौरा किया और सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी पर तीखा तंज कसते हुए उवा किया कि सपा द्वारा उम्मीदवार घोषित किए जाने के बाद भाजपा सर्वे पर सर्वे करा रही है और उसे अयोध्या में खड़ा करने के लिए कोई उपयुक्त प्रत्याशी ही नहीं मिल रहा है। अखिलेश ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को सीधे चुनौती दे डाली कि अगर उन्हें अपनी लोकप्रियता और विकास कार्यों पर इनाम ही भरोसा है, तो वे खुद आगामी विधानसभा चुनाव में अयोध्या सीट से मैदान में उतरकर दिखाएं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस चुनौती को न सिर्फ स्वीकार कर लिया, बल्कि इसे एक कदम आगे बढ़ाते हुए अखिलेश यादव को ही कटघरे में खड़ा कर दिया और एक सार्वजनिक कार्यक्रम में साफ शब्दों में कहा कि अगर हम है तो अखिलेश भी अयोध्या से चुनाव लड़ें और वे भी लड़ेंगे, दोनों आमने-सामने नामांकन दाखिल कर एक बार अपनी किस्मत आजमा लें ताकि मामला हमेशा के लिए तय हो जाए। योगी के इस सीधे प्रहार पर अखिलेश यादव ने भी तुरंत प्रतिक्रिया दी और इस सीधे मुकाबले को यह कहते हुए टालने की कोशिश की कि भाजपा को हराने के लिए उनका एक युवा 'पीडीए' प्रहर ही काफी है। इस बार, यह नामांकन प्रक्रिया सिर्फ कागजी कार्यवाहियों तक सीमित नहीं है, बल्कि सूबे के दो सबसे बड़े दिग्गजों—मुख्यमंत्री योगी

चेराबंदी का यह सबसे आक्रामक रूप है। किसी भी राजनैतिक दल के लिए चुनाव की घोषणा के बाद नामांकन का चरण सबसे अधिक तनावपूर्ण और आंतरिक संघर्षों से भरा होता है क्योंकि टिकटों की घोषणा से लेकर नामांकन पत्र दाखिल करने के अंतिम मिनट तक दलों के भीतर जो उथल-पुथल मचती है, वह सांगठनिक ढांचे को हिलाकर रख देती है। टिकट न मिलने से नाराज कार्यकर्ताओं और नेताओं का विद्रोह उत्तर प्रदेश की राजनीति का एक कड़वा और अपरिवर्तनीय सच है, जहां नामांकन के ठीक पहले पाला बदलना, रातो-रात प्रतिद्वंद्वी पार्टी की सदस्यता ले



लेना, निर्दलीय पर्चा दाखिल कर देना या अपनी ही पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवार का खेल बिगाड़ने के लिए किसी डमी प्रत्याशी को खड़ा कर देना सबसे बड़ा सांगठनिक चैलेंज बन जाता है। भारतीय जनता पार्टी जैसी कैडर-आधारित पार्टी हो या समाजवादी पार्टी जैसी मजबूत क्षेत्रीय ताकत, आंतरिक असंतोष को दबाना और रूठे हुए नेताओं को माना इस समय दोनों ही खेमों के लिए सबसे बड़े चुनौती बना हुआ है, और जब बड़े नेता एक-दूसरे को सीधे नामांकन की चुनौती दे रहे हों, तो जमीनी कार्यकर्ताओं को अनुशासित रखना और अधिक मुश्किल हो जाता है। इसके साथ ही, चुनाव आयोग ने हाल के वर्षों में नामांकन पत्रों की स्कूटनी और हलफनामों की समीक्षा को अत्यधिक कड़ा कर दिया है, जिसके तहत शपथ पत्र में अपनी संपत्ति, आपराधिक इतिहास, शैक्षणिक योग्यता और वित्तीय देनदारियों का रत्ती भर भी गलत विवरण देना पूरे

नामांकन को निरस्त करा सकता है, जैसा कि हाल ही में संपन्न हुए राज्यसभा और विधान परिषद द्विवार्षिक चुनावों के दौरान कुछ निर्दलनप्य व छोटे दलों के उम्मीदवारों के पर्चे खरिज होने से साबित भी हो चुका है।

उत्तर प्रदेश जैसे विशाल, सघन आबादी और राजनैतिक रूप से संवेदनशील राज्य में नामांकन के दौरान कानून-व्यवस्था बनाए रखना जिला प्रशासनों और स्रद्धू महकमे के लिए किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं होता क्योंकि कलेक्ट्रेट और कमिश्नरी कार्यालयों के बाहर का दृश्य अक्सर राजनैतिक शक्ति प्रदर्शन का अखाड़ा बन जाता है। नामांकन दाखिल करने जाते समय उम्मीदवारों द्वारा भारी भीड़ जुटाना, अपनी ताकत का अहसास कराना और गाड़ियों के लंबे काफिले ले जाना एक आम बखन बन चुका है, जिसके कारण चुनाव आयोग के कड़े नियमों के बावजूद कलेक्ट्रेट परिसर के बाहर समर्थकों का हजूम नियंत्रित करना पुलिस के लिए सबसे बड़ा सिरदर्द साबित होता है और इस दौरान आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के मामले सबसे ज्यादा दर्ज होते हैं। उत्तर प्रदेश के कई जिले राजनैतिक और सामाजिक रूप से अत्यधिक संवेदनशील माने जाते हैं, जहां नामांकन के दौरान प्रतिद्वंद्वी गुटों के बीच झड़प, नारेबाजी और कभी-कभी हिंसक टकराव की आशंका बनी रहती है, जिससे निपटने के लिए प्रशासन को चप्पे-चप्पे पर सीसीटीवी कैमरों, ड्रोन कैमरों और भारी संख्या में प्रंतीय सशस्त्र कांस्टेबुलरी तथा अर्धसैनिक बलों की तैनाती करनी पड़ती है ताकि पूरी नामांकन प्रक्रिया निष्पक्ष, पारदर्शी और शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो सके। इस चुनावी माहौल में डिजिटल तकनीक जहां एक वरदान है, वहीं यह प्रशासन के लिए एक बड़ी

चुनौती भी बनकर उभरी है क्योंकि हाल के हफ्तों में सोशल मीडिया पर उत्तर प्रदेश में पंचायत और स्थानीय निकायों के चुनावों के नामांकन और तारीखों को लेकर कई फर्जी और भ्रामक खबरें प्रसारित की गईं, जिनका खंडन करना और जनता के बीच सही सूचना पहुंचाना राज्य निर्वाचन आयोग के लिए एक अतिरिक्त प्रशासनिक चुनौती बन गया है।

वास्तव में, योगी और अखिलेश के बीच छिड़ा यह नामांकन युद्ध आगामी महासमर की नांव रख रहा है और वर्तमान में जो भी सांगठनिक फेरबदल या राजनैतिक बयानबाजी हो रही है, वह मुख्य चुनाव के मद्देनजर ही की जा रही है, जिसमें सभी प्रमुख दलों के सामने अपनी-अपनी विशिष्ट चुनौतियां हैं। लगातार दो बार राज्य की सत्ता पर काबिज रहने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा के सामने सत्ता विरोधी लहर को कम करने और नए चेहरों को मौका देने की चुनौती होगी, और जब विधानसभा चुनाव के वास्तविक नामांकन शुरू होंगे, तब मौजूदा विधायकों के टिकट काटने या बदलने पर जो आंतरिक असंतोष पैदा होगा, उसे संभालना पार्टी के शीर्ष नेतृत्व और योगी आदित्यनाथ के लिए सबसे बड़ा इम्तिहान होगा। दूसरी तरफ, समाजवादी पार्टी पिछले कुछ समय से अपने 'पीडीए' (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) फॉर्मूले के साथ खुद को री-ब्रांड कर रही है, और अखिलेश यादव के लिए चुनौती यह होगी कि वे टिकट वितरण और नामांकन के समय इस सामाजिक समीकरण को जमीन पर कैसे उतारते हैं तथा अयोध्या जैसी प्रतीकात्मक और हाई-प्रोफाइल सीट पर योगी आदित्यनाथ की सीधी चुनौती का सामना करने के लिए वे अपने मौजूदा घोषित प्रत्याशी पर

भरोसा बनाए रखते हैं या खुद मैदान में उतरकर इस राजनैतिक जुए को खेलने का साहस दिखाते हैं।

नामांकन की प्रक्रिया लोकतंत्र के भव्य पवन की वह पहली ईंट है, जिस पर पूरे चुनाव की शुचिता, विश्वसनीयता और पारदर्शिता टिकी होती है और उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में, जहां की राजनीति जाति, धर्म, क्षेत्रीयता, बाहुबल और धनबल के अत्यधिक जटिल ताने-बाने से बुनी गई है, वहां नामांकन की निर्विघ्न और निष्पक्ष बनाना एक युगांतकारी कार्य है। योगी आदित्यनाथ और अखिलेश यादव के बीच की 'अयोध्या नामांकन चैलेंज' यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि उत्तर प्रदेश का आगामी चुनाव किसी भी सामान्य चुनाव से अलग, एक वैचारिक और व्यक्तिगत प्रतिष्ठा की लड़ाई बनने जा रहा है। चुनौतियां चाहे राजनैतिक दलों के भीतर टिकटों को लेकर मंटे घमासान की हों, कलेक्ट्रेट के बाहर कानून-व्यवस्था की हों, या फिर दोनों शीर्ष नेताओं के बीच आमने-सामने के मुकाबले की हों—इन सबका समाधान केवल और केवल सख्त प्रशासनिक इच्छाशक्ति, चुनाव आयोग की निष्पक्षता और राजनैतिक दलों की लोकतांत्रिक परिपक्वता में ही निहित है। उत्तर प्रदेश की जागरूक जनता नामांकन के इस शोर-शराबे, रैलियों के शक्ति प्रदर्शन और शीर्ष टिकटों की इस राजनैतिक जंग के बीच हर उम्मीदवार के हलफनामे, उसके आचरण और उसकी पार्टी की नीति का बहुत सूक्ष्मता से मूल्यांकन कर रही है और अपने वाले महीनों में यह देखना अत्यंत दिलचस्प होगा कि देश का यह सबसे बड़ा राजनैतिक सूबा इन चुनौतियों से पर पाकर किस तरह एक नए राजनैतिक भविष्य की इबारत लिखता है और क्या 'अयोध्या' वास्तव में इस महामुकाबले का मुख्य केंद्र बिंदु बनती है।

शॉर्टकट और वर्चुअल चकाचौंध के बीच जरूरी है ब्रह्मचारिणी का संयम और चंद्रघंटा का वैचारिक संतुलन



- राजकुमार जैन, लेखक वरिष्ठ संहकार, उद्यमी एवं स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं। यातायात प्रबंधन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, समसामयिक सामाजिक विमर्शों, युवा चेतना, डिजिटल संस्कृति, जैन और भारतीय दर्शन के अंतर्संबंधों पर आपके विचार राष्ट्रीय व क्षेत्रीय पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से प्रकाशित होते रहते हैं।

0-जब समाज में अन्याय हो

रहा हो और आप विनम्रता की आड़ में मौन साध लें, तो वह सज्जनता नहीं, कायरता है।

चंद्रघंटा सिखाती हैं कि मयादां पर आंच आए तो घंटे की तरह गरज उठिए।

नवरात्रि केवल नौ रातों का पापरिक्त अनुष्ठान, उपवास की औपचारिकता या लाउडस्पीकर पर बजते भजनों के बीच डाँडिया की थिरकन नहीं है। यह ऋतु-परिवर्तन के संधिकाल में मानव चेतना को भीतर से मथने का एक आध्यात्मिक और सामाजिक घोषणापत्र है। पौराणिक आख्यानों में यह पर्व महिषासुर के आतंक पर आदिशक्ति के विजय-शंखनाद का प्रतीक है। इतिहास गवाह है कि जब-जब समाज में जड़ता, विलासिता और असुर प्रवृत्तियां हावी हुईं, तब-तब बिखरी हुई शक्तियों को एकजुट कर सामूहिक ऊर्जा का संधान किया गया। मयादां पुरुषोत्तम राम ने भी लंका विजय से पूर्व नौ दिनों तक इसी शक्ति की साधना की थी। यह किसी अलौकिक चमत्कार परतीक्षा का उत्सव नहीं, बल्कि शून्य से महाशक्ति के सृजन का महापर्व है। विडंबना यह है कि हमने इस दर्शन को पंडालों के शोर और सोशल मीडिया की सजावट तक समेट

दूसरे दिन ब्रह्मचारिणी का तप हमें तात्कालिक सुखों की बीमारी से आगाह करता है। नंगे पैर, हाथ धोए और औरतों में यौन कुंठाग्रस्त होने के केशों में तेजी से इजाफा हो रहा है। यह एक टेबू (खुल कर बात न किए जाना वाला) विषय है। ऐसे विषय पर बात करने के लिए थोड़ी बेबाकी की जरूरत होती है, क्योंकि इससे संबंधित पुरुष और औरत की सामाजिक और पारिवारिक जिंदगी भी प्रभावित होती है। अपेक्षाओं की आधुनिक समाज की इसकाण्णों को ध्यान में रखते हुए ऐसे मुद्दों पर खुल कर बात होनी चाहिए। औरत हो या मर्द, यौन कुंठाग्रस्त

होना एक ऐसी मानसिक स्थिति है, जब व्यक्ति की यौन इच्छाएं और वास्तविकता के बीच असंतुलन होता है। यानी उसकी यौन जरूरतें या अपेक्षाएं पूरी नहीं हो पातीं। यौन कुंठा वह अनुभव है, जब आपको वह यौन संतुष्टि नहीं मिलती, जिसकी आपको आवश्यकता या इच्छा होती है। चाहे कोई अविवाहित हो, किसी रिश्ते में हो, विवाहित हो, यौन संबंध कई लोगों के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जब यौन जरूरतें पूरी नहीं होतीं, तो इससे उत्पन्न निराशा आपके मूड, आपके रिश्तों और आपके समग्र स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती हैं। यहां तक कि

यौन संबंध का कमी वास्तव में अवसाद यानी डिप्रेशन का कारण बन सकती है। यौन कुंठा की शुरुआत अंतरंग जीवन में असंतोष से हो सकती है। माना जाता है कि यौन गतिविधि तनाव हार्मोन को कम करती है। यौन कुंठा से कुछ लोगों में अकेलेपन, निराशा और भावनात्मक अलगाव की भावना बढ़ जाती है। यौन कुंठा के बारे में सबसे आम गलत धारणाओं में से एक यह है कि यह मुख्य रूप से अविवाहित लोगों को प्रभावित करती है। वास्तव में, प्रतिबद्ध संबंधों में रहने वाले लोग भी इससे उतना ही जूझ सकते हैं।

रिश्तों में यौन कुंठा भावनात्मक जुड़ाव और आत्मसम्मान को भी कमजोर कर सकती है। इन चुनौतियों का सामना कर रहे लोगों के लिए प्रभावी संचार सबसे महत्वपूर्ण साधनों में से एक है। कभी-कभी यौन कुंठा का कारण रिश्ते की गतिशीलता ही होती है। एक ऐसा साथी, जो यौन प्रदर्शन को लेकर अत्यधिक आलोचनात्मक हो, या जो कठोर और असांतविक अपेक्षाएं रखता हो, ऐसा माहौल बन सकता है जहां यौन संबंध जुड़ाव का स्रोत होने की बजाय एक परीक्षा जैसा लगने लगे। मनोविज्ञानी कहते हैं कि इस क्षेत्र में लगातार आलोचना मिलने से आत्म-

नौवें दिन सिद्धिदात्री समस्त सिद्धियों, दक्षता और पूर्णता की अधिष्ठात्री बनकर आती हैं, जिन्से स्वयं महादेव ने शक्तियां प्राप्त कीं। किंतु सिद्धिदात्री की सबसे बड़ी सीख है, सर्वोच्च शिक्षर पर पहुंचकर भी जमीन से जुड़े रहना और विनम्र बने रहना। आज थोड़ी सी डिग्री, पद या दौलत मिलते ही ईंसान का अहंकार आसमान छूने लगता है। सिद्धिदात्री याद दिलाती हैं कि असली महारत वह है जो आपको सहज और लोक-

सदेह, लाचारी और भावनात्मक अलगाव जैसी भावनाएं उत्पन्न हो सकती हैं, जो अवसाद का कारण बन सकती हैं। यौन कुंठा तब भी उत्पन्न हो सकती है, जब संझेदारों की जरूरतें, पसंद या इच्छा का स्तर अलग-अलग हो। जब इन अंतरों को स्वीकार नहीं किया जाता या उन पर चर्चा नहीं की जाती, तो शर्म और अपराधबोध विकसित हो सकता है तथा समय के साथ यह रिश्ते और व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य दोनों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। इसे ठीक तरीके से हैंडल करने की आवश्यकता है। गौरलबल हो कि यौन कुंठा एक अत्यंत

संवेदनशील, अत्यंत भावनात्मक और एक न कहा जा सकने वाला शारीरिक और मानसिक विकार है। अगर आप किसी रिश्ते में हैं, तो अपनी जरूरतों के बारे में खुलकर बात करना बेहद जरूरी है। यौन कुंठा से ग्रस्त डिप्रेशन का शिकार हो रहे, चाहे औरत हो या पुरुष, दोनों को यह समझने का हक है कि क्या ठीक नहीं चल रहा और इस प्रक्रिया में उन्हें सुना जाना चाहिए। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण यह है कि जो पुरुष और औरत यौन कुंठा के बारे में खुलकर बात करते हैं, उन्में रिश्ते की संतुष्टि का स्तर ज्यादा होता है।-डा. वरिन्द्र भाटिया

संवेदनशील, अत्यंत भावनात्मक और एक न कहा जा सकने वाला शारीरिक और मानसिक विकार है। अगर आप किसी रिश्ते में हैं, तो अपनी जरूरतों के बारे में खुलकर बात करना बेहद जरूरी है। यौन कुंठा से ग्रस्त डिप्रेशन का शिकार हो रहे, चाहे औरत हो या पुरुष, दोनों को यह समझने का हक है कि क्या ठीक नहीं चल रहा और इस प्रक्रिया में उन्हें सुना जाना चाहिए। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण यह है कि जो पुरुष और औरत यौन कुंठा के बारे में खुलकर बात करते हैं, उन्में रिश्ते की संतुष्टि का स्तर ज्यादा होता है।-डा. वरिन्द्र भाटिया

सुप्रसिद्ध उद्योगपति संजय सिंह को दी जन्मदिवस की शुभकामनाएँ



नालासोपारा (उत्तरशक्ति)। उत्तर प्रदेश के जनपद जौनपुर के ग्राम कटौना से संबंध रखने वाले सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं सिटी लॉजिक (City Logic) के संचालक संजय सिंह को उनके जन्मदिवस के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ प्रेषित की गई।

वर्तमान में मुंबई महानगर क्षेत्र के नालासोपारा में व्यवसाय संचालित कर रहे संजय सिंह ने अपनी उद्यमशीलता, कार्यनिष्ठा एवं अनुभव के बल पर व्यावसायिक जगत में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों में उनकी रुचि, समाजशास्त्रीय चिंतन तथा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से उनका जुड़ाव उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को परिलक्षित करता है। संजय सिंह का व्यक्तित्व व्यावसायिक प्रतिबद्धता, सामाजिक चेतना एवं मार्गदर्शक दृष्टिकोण का समन्वित स्वरूप है। अपनी जन्मभूमि से आत्मीय संबंध बनाए रखते हुए कर्मभूमि में व्यावसायिक गतिविधियों के माध्यम से सक्रिय रहना उनके जीवन की उल्लेखनीय विशेषता है। सामाजिक संस्थाओं के साथ सहभागिता तथा समाजहित के विषयों में उनकी रुचि उन्हें सामाजिक क्षेत्र में भी एक विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। उनके जन्मदिवस के अवसर पर शुभचिंतकों ने उनके उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु, सुख-समृद्धि एवं निरंतर प्रगति की कामना की। आशा व्यक्त की गई कि वे भविष्य में भी अपने अनुभव, विचारों एवं मार्गदर्शन से समाज को लाभान्वित करते हुए उद्योग एवं सामाजिक विकास के क्षेत्र में अपना योगदान निरंतर देते रहेंगे। विशेष रूप से, शारदीय नवरात्रि के प्रथम दिवस पर माँ दुर्गा के प्रथम स्वरूप माँ शैलपुत्री से प्रार्थना है कि उनकी कृपा श्री संजय सिंह जी एवं उनके परिवार पर सदैव बनी रहें। संजय सिंह को जन्मदिवस की हार्दिक बधाई एवं शारदीय नवरात्रि की मंगलमय शुभकामनाएँ।

कई वर्षों बाद फिर शुरू हुई भट्ठी मोड़ की रामलीला

दुहड़ी, सोनभद्र (उत्तरशक्ति)। गुलालझरिया गांव के भट्ठी मोड़ पर कई वर्षों से बंद रामलीला और दुर्गा पूजा कार्यक्रम को युवाओं की पहल पर दोबारा शुरू किया गया। श्री रामलीला नवयुवक समिति के तत्वावधान में शिव हॉस्पिटल के संचालक डॉ. मनोज कुमार मौर्य और मां भारती जन सेवा ट्रस्ट के ट्रस्टी अनिल हलवाई ने फीता काटकर शुभारंभ किया। इस दौरान हनुमान जी के मुकुट और शस्त्रों का पूजन किया गया तथा रजखंड के कलाकारों ने रामलीला का मंचन किया।

डॉ. मनोज कुमार मौर्य ने कहा कि रामलीला भगवान श्रीराम के आदर्शों, त्याग, प्रेम और समर्पण की सीख देती है। वहीं, अनिल हलवाई ने युवाओं की पहल की सराहना करते हुए आर्थिक सहयोग दिया और भविष्य में भी सहायता का आश्वासन दिया।

समिति अध्यक्ष रामभरत साहनी ने बताया कि युवाओं ने रामलीला और दुर्गा पूजा को प्रतिवर्ष जारी रखने का संकल्प लिया है। उन्होंने ग्रामीणों से आयोजन में सहयोग की अपील की। कार्यक्रम में समिति के पदाधिकारी, कार्यकर्ता और बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

सिकरारा पुलिस ने लूटकांड का किया खुलासा, 15 हजार रुपये नकद के साथ एक आरोपी गिरफ्तार

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। सिकरारा थाना पुलिस ने लूट की घटना का खुलासा करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 15 हजार रुपये नकद, यूनियन बैंक की दो चेकबुक, पंजाब नेशनल बैंक की एक पासबुक, कैश वितरण रजिस्टर, परिचय पत्र और घटना में प्रयुक्त वाहन बरामद किया है। लूटी गई स्कूटी पुलिस पहले ही बरामद कर चुकी थी।

पुलिस के अनुसार, बीते 8 अक्टूबर को देवपुर (धोवहाँ) निवासी मनमोहन सिंह शेरवां स्थित अपने ग्राहक सेवा केंद्र को बंद कर स्कूटी से घर लौट रहे थे। इसी दौरान अज्ञात बदमाश उनकी स्कूटी की डिगनी में रखे रुपये और जरूरी दस्तावेज लूटकर फरार हो गए थे। पीड़ित की तहरीर पर सिकरारा थाने में मुकदमा दर्ज कर पुलिस मामले की जांच में जुटी थी।

इसी क्रम में 11 अक्टूबर को मुखबिर की सूचना पर पुलिस टीम ने सुरतासापुर नहर पुलिया से अभिषेक शुक्ला पुत्र अरुण कुमार शुक्ला, निवासी बभनौली, थाना सिकरारा, को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के मुताबिक, आरोपी के खिलाफ सिकरारा थाने में पहले से भी दो मुकदमे दर्ज हैं। मामले में अग्रिम विधिक कार्रवाई की जा रही है।

बाल विवाह किशोरियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास की संभावनाओं पर डालता है प्रतिकूल प्रभाव:संतोष पाण्डेय



जितेन्द्र कनोजिया
केराकत,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। स्थानीय थानागद्दी क्षेत्र में स्थित धर्मशाला में अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर जस्ट राइट फार चिल्ड्रन के संस्थापक व आस्था महिला एवं बाल विकास संस्था द्वारा संचालित रमैरी मुस्कानर प्रोजेक्ट के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित की गई।कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बालिकाओं को शिक्षा,स्वास्थ्य,लैंगिक समानता एवं उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना तथा बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीति को समाप्त करने के लिए समुदाय को प्रेरित करना था।इस दौरान ग्राम पंचायत सोहनी, बराई, नाडपूर समेत करीब दस ग्रामसभाओं की कुल 300 किशोरियों ने भाग लेकर अपनी बात रखी। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पहुंची जिलामंत्री मछलीशहर महिला मोर्चा जूही सिंह ने लैंगिक समानता और किशोरी सशक्तीकरण के महत्व पर चर्चा करते हुए कहा कि किशोरियों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने, अपनी बात आत्मविश्वास के साथ रखने, शिक्षा से जुड़े रहने तथा किसी भी प्रकार के भेदभाव और हिंसा के विरुद्ध आवाज उठाने की बात को कही।साथ ही उन्होंने कहा कि एक सशक्त और समान समाज के निर्माण के लिए बालिकाओं को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराना तथा उनके निर्णयों का सम्मान करना आवश्यक है।वही शिक्षा विभाग से लड़क अहमद ने कहा कि बालिकाओं को भी लड़कों के समान शिक्षा, स्वास्थ्य, सम्मान और आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त होने चाहिए।

संस्था के निदेशक संतोष कुमार पांडेय ने बाल विवाह की रोकथाम पर विशेष जोर देते हुए किशोरियों को बताया कि कम उम्र में विवाह होने से उनकी शिक्षा,स्वास्थ्य, शारीरिक एवं मानसिक विकास तथा भविष्य की संभावनाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बाल विवाह बालिकाओं के अधिकारों और उनके उज्ज्वल भविष्य में बाधा बन सकता है। इसलिए परिवार, समुदाय और समाज के सभी लोगों की जिम्मेदारी है कि वे बाल विवाह को रोकने में सक्रिय भूमिका निभाएं और प्रत्येक बालिका को अपनी शिक्षा पूरी करने तथा अपने सपनों को साकार करने का अवसर दें।इस अवसर पर मेरी मुस्कान प्रोजेक्ट की मैनेजर वंदना,सविता,शीला,रीना, रमेश पांडे,अंकित,दीप नारायण समेत भारी तादात में किशोरी व महिलाएं मौजूद रही।

वसई में जाखड़ी फेस्टिवल में शामिल हुई विधायक स्नेहा दुबे पंडित

वसई। महाराष्ट्र की समृद्ध लोक संस्कृति और पारंपरिक कलाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से वसई पश्चिम स्थित एस. के. भंडारी समाज हॉल, अनंतराव ठाकुर थिएटर के पास, पारनाका में हाजाखड़ी फेस्टिवलल्लू का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वसई की विधायक स्नेहा दुबे पंडित ने कार्यक्रम में शामिल होकर पारंपरिक जाखड़ी लोक कला का आनंद लिया और कलाकारों की प्रस्तुतियों की सराहना की।

महाराष्ट्र सरकार के सांस्कृतिक कार्य निदेशालय, मुंबई की ओर से आयोजित इस महोत्सव में विभिन्न जाखड़ी कला समूहों ने अपनी शानदार प्रस्तुतियों के माध्यम से महाराष्ट्र की समृद्ध लोक संस्कृति और पारंपरिक कलाओं की सुंदर झलक पेश की। कलाकारों की आकर्षक प्रस्तुतियों ने उपस्थित



लोगों का मन मोह लिया।

विधायक स्नेहा दुबे पंडित ने इस अवसर पर कलाकारों को बधाई देते हुए लोक कला की विरासत को

संरक्षित करने और नई पीढ़ी तक पहुंचाने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पारंपरिक लोक कलाएं महाराष्ट्र की सांस्कृतिक

विद्यासेवक सहकारी पतपेढ़ी के 39वें मेरिट अवॉर्ड समारोह में शामिल हुए डॉ. हेमंत सांवरा



वाडा (पालघर)। ठाणे जिला विद्यासेवक सहकारी पतपेढ़ी लिमिटेड की वाडा शाखा की ओर से आयोजित 39वें मेरिट अवॉर्ड समारोह में पालघर के सांसद डॉ. हेमंत सांवरा ने सहभागिता की। इस समारोह में मेधावी विद्यार्थियों और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सदस्यों को सम्मानित किया गया।

समारोह का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों को सम्मानित करना तथा उन्हें भविष्य में बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करना था। इस अवसर पर सांसद डॉ. हेमंत सांवरा ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि वे कड़ी मेहनत, लगन और दृढ़ संकल्प के साथ सफलता की नई

ऊंचाइयों को हासिल करें। अपनी उपलब्धियों से वे न केवल अपने परिवार, बल्कि समाज का नाम भी रोशन करें।

उन्होंने मेधावी विद्यार्थियों और सदस्यों को सम्मानित करने की इस पहल की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने वाले ऐसे आयोजनों युवा पीढ़ी को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं और शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं।

इस अवसर पर सांसद डॉ. हेमंत सांवरा ने समारोह के सफल आयोजन के लिए संगठन के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों और आयोजकों को बधाई दी। उन्होंने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि शिक्षा और मेहनत के बल पर ही युवा अपने जीवन में नई उपलब्धियां हासिल कर सकते हैं।

गणेश पागी बने भाजपा वसई-विरार जिला एसटी मोर्चा उपाध्यक्ष

वसई। भारतीय जनता पार्टी वसई-विरार जिला अध्यक्ष श्रीमती प्रज्ञा पाटिल ने गणेश पागी को वसई-विरार जिला एसटी मोर्चा के उपाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया है। उनकी नियुक्ति की जानकारी मिलते ही भाजपा कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों में खुशी की लहर दौड़ गई।

गणेश पागी पूर्व नगरसेवक के रूप में भी अपनी सेवाएं दे चुके हैं। उनके अनुभव और संगठन के प्रति योगदान को देखते हुए उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। नियुक्ति के बाद वसई शहर मंडल अध्यक्ष महेश सरवनकर, निपुण देशी, जीतू वेगुलकर और नंदू पवार ने उन्हें शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल कार्यकाल की कामना की। इस अवसर पर वसई शहर मंडल अध्यक्ष महेश सरवनकर ने कहा कि



भारतीय जनता पार्टी एक अनुशासित और संगठनात्मक रूप से मजबूत पार्टी है, जहां कार्यकर्ताओं को उनकी जिम्मेदारियों और योगदान के अनुसार संगठन में कार्य करने का अवसर मिलता है। उन्होंने विश्वास जताया कि गणेश पागी अपनी नई जिम्मेदारी का निर्वहन पूरी निष्ठा से करेंगे और संगठन को मजबूत बनाएं

में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

गणेश पागी की नियुक्ति से स्थानीय भाजपा कार्यकर्ताओं में उत्साह का माहौल है। कार्यकर्ताओं ने उम्मीद जताई कि उनके नेतृत्व में एसटी मोर्चा का संगठनात्मक कार्य और अधिक प्रभावी होगा तथा समाज के लोगों से जुड़ाव मजबूत होगा।

मराठी जी5 की कोण यशवंत पानसरे? में भरत जाधव और पुष्कर श्रोत्री के बीच न्याय के लिए होगी जोरदार भिड़ंत



रांगोले, पुष्कर श्रोत्री, शर्वरी जामेनिस, उज्ज्वला जोग, विद्याधर जोशी और मिलिंद पाठक सहित कई अन्य कलाकार प्रमुख भूमिकाओं में हैं। कोण यशवंत पानसरे? का प्रसारण 16 अक्टूबर 2026 से मराठी जी5 पर होगा।

कौन यशवंत पानसरे? एक जांच पर आधारित अदालती कहानी है, जो सिर्फ अदालत की कार्यवाही तक सीमित नहीं रहती, बल्कि अलका के लापता होने के पीछे की असलियत

को सामने लाती है। पानसरे की न्याय की तलाश उनके लिए अपने अतीत का सामना करने और एक वकील के रूप में अपनी पहचान फिर से हासिल करने की बेहद व्यक्तिगत यात्रा बन जाती है। यह सीरीज न्याय और सत्ता के बीच के संघर्ष को भी सामने लाती है, जिसमें जवाब तलाश रहा एक व्यक्ति प्रभावशाली संस्थागत एवं राजनीतिक ताकतों के सामने खड़ा होता है।जैसे-जैसे जनहित याचिका बंदी प्रत्यक्षीकरण

पहचान हैं और इनके संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं।

कार्यक्रम में भाजपा वसई-विरार शहर जिला महासचिव बिजेंद्र कुमार, वसई शहर मंडल महासचिव संतोष काकड़, नीलेश भानुसे, श्रीमती राजल नाइक, श्रीमती सुचिता शेठ्डी, मनमित राउत, यशोधन ठाकुर, अशोक मिश्रा, श्रीमती प्रमिला गेर, प्रतीक चौधरी, योगेश भानुसे, प्रवेश दुबे, गिरीश नाइक और पुंडलिक राठौड़ सहित कई नागरिक, पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।जाखड़ी फेस्टिवल के माध्यम से पारंपरिक लोक कला को मंच प्रदान करने और कलाकारों की प्रतिभा को प्रोत्साहित करने का संदेश दिया गया। कार्यक्रम ने महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने और लोक कलाओं को नई पहचान दिलाने की आवश्यकता को रेखांकित किया।

वसई पश्चिम में अवैध लॉटरी और मटका कारोबार पर कार्रवाई की मांग



वसई। वसई पश्चिम के मानिकपुर नाका, पंचवटी और रेलवे स्टेशन परिसर में कथित अवैध ऑनलाइन लॉटरी, मटका और जुए के अड्डों के संचालन से आम

पल्लवी प्रवीण कोपिकर ने इस मामले में 7 और 20 सितंबर 2026 को मानिकपुर पुलिस स्टेशन के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक तथा विधायक स्नेहा दुबे-पंडित के कार्यालय में जियो-टैगिंग सहित शिकायत दर्ज कराई है। शिकायत में वसई रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 1 के निकास, ईवा अपार्टमेंट गली और स्टेशन ब्रिज के प्रवेश मार्ग सहित अन्य स्थानों का उल्लेख किया गया है। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया है कि इन अड्डों के कारण यात्रियों, महिलाओं और स्थानीय नागरिकों को परेशानी हो रही है। उन्होंने संबंधित स्थानों की जांच कर अवैध गतिविधियों में शामिल लोगों के खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है।

महाडा कॉम्प्लेक्स, विरार पश्चिम में रक्तदान शिविर संपन्न

विरार। महाडा कॉम्प्लेक्स, विरार पश्चिम में शिलान्यास समारोह के शुभ अवसर पर एक भव्य रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर रक्तदान के माध्यम से जरूरतमंद मरीजों की मदद करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में नालासोपारा के विधायक राजन नाईक की उपस्थिति रही।

इस अवसर पर रक्तदान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा गया कि रक्तदान केवल एक सामाजिक कार्य नहीं, बल्कि किसी जरूरतमंद व्यक्ति को नया जीवन देने का माध्यम है। दुर्घटना, गंभीर बीमारी और आपातकालीन परिस्थितियों में रक्त की आवश्यकता को देखते हुए ऐसे शिविरों का विशेष महत्व है। शिविर में रक्तदान करने वाले सभी रक्तदाताओं के प्रति आभार व्यक्त किया गया। साथ ही,



इस सामाजिक पहल का आयोजन करने वाले उन्नति सेवा प्रतिष्ठान एवं श्री अर्धन्यायक सांस्कृतिक मंडल के सभी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं की सामाजिक प्रतिबद्धता की सराहना की गई। आयोजकों ने लोगों से अपील की कि

वे रक्तदान के प्रति जागरूकता बढ़ाएं और नियमित रूप से रक्तदान करने के लिए आगे आएँ, ताकि जरूरतमंद मरीजों को समय पर रक्त उपलब्ध हो सके। इस आयोजन के माध्यम से समाज में मानवता, सेवा और सहयोग का संदेश दिया गया।

मुंगराबादशाहपुर में एटीएम ठगी का आरोपी गिरफ्तार, 41 एटीएम कार्ड बरामद

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। मुंगराबादशाहपुर थाना पुलिस ने एटीएम कार्ड बदलकर लोगों के खातों से रुपये निकालने के आरोप में हरियाणा निवासी एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उसके कब्जे से विभिन्न बैंकों के 41 एटीएम कार्ड, 1,870 रुपये नकद और एक सैमसंग एंड्रॉयड मोबाइल फोन बरामद किया है। पुलिस के अनुसार, 10 अक्टूबर 2026 को मुखबिर की सूचना पर मुंगराबादशाहपुर कस्बे में बैंक ऑफ बड़ौदा के एटीएम बूथ से संजय कुमार (40), पुत्र सूबे सिंह, निवासी हांसी, जनपद हिसार, हरियाणा को गिरफ्तार किया गया। पुलिस का आरोप है कि वह एटीएम बूथ पर लोगों के कार्ड बदलकर उनके खातों से रुपये निकालने की हेराफेरी करता था।

इस मामले में पुलिस ने मुकदमा संख्या 336/2026 के तहत भारतीय न्याय संहिता की धारा 318(4) में मुकदमा दर्ज किया है। आवश्यक विधिक कार्रवाई के बाद आरोपी को न्यायालय भेज दिया गया।

पुलिस के मुताबिक, आरोपी के खिलाफ मेरठ जनपद के विभिन्न थानों में भी धोखाधड़ी और चोरी से संबंधित चार मुकदमे दर्ज हैं।



डॉ० मोहम्मद अकमल
(फिजिशियन)
पता - मानीकलां, जौनपुर



SHIFA HOSPITAL

CMO Reg. RME. 2341801

अहमदी मेमोरियल

शिफा मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल



डॉ. मोहम्मद अंजद
एम.बी.बी.एस.
जनरल फिजिशियन

डॉ० अमृ फैसल
MBBS, Ortho PGDS
हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ
समय - सुबह 9 बजे से रात 8 बजे तक
(सुरक्षा, रजिस्ट्रार)

डॉ० मोहम्मद चाँद बागवान
MBBS, DNB, MD (Lucknow)
सुर, चैस्ट एवं हृदय रोग विशेषज्ञ
समय - सुबह 8 बजे से 11 बजे तक
(सुरक्षा, रजिस्ट्रार)

डॉ० यसीरा अली
MBBS, MS (Job & Gyna Surgeon)
और रोग एवं बांझपन विशेषज्ञ (Infertility)
समय - सुबह 8 बजे से 11 बजे तक
(सुरक्षा, रजिस्ट्रार)

डॉ० सुनील कुमार दुबे
MBBS, MS
(Laprosopic Surgeon) on call

डॉ० एम के वर्मा
P.G.D.C. (Delhi)
(सी रोग विशेषज्ञ)
समय - सुबह 9 बजे से रात 8 बजे तक
(सुरक्षा, रजिस्ट्रार)

डॉ० मोहम्मद अब्दुल्लाह
(सी रोग विशेषज्ञ)
समय - सुबह 9 बजे से 11 बजे तक
(सुरक्षा, रजिस्ट्रार)

डॉ० सना अब्दुल्लाह
(सी रोग विशेषज्ञ)
समय - सुबह 9 बजे से 11 बजे तक
(सुरक्षा, रजिस्ट्रार)

डिजिटल एक्स-रे, कम्प्यूटराइज्ड पैथोलॉजी, E.C.G., हृदय रोग विशेषज्ञ, चैस्ट रोग विशेषज्ञ, हड्डी रोग विशेषज्ञ, स्त्री रोग विशेषज्ञ, दन्त चिकित्सक फिजियोथेरापी, डिलेवरी (नार्मल, सिजेरियन) दूरबीन विधि से पित्ताशय में पथरी, अपेंडिक्स, बच्चीदानी, हाइड्रोसेल का ऑपरेशन भर्ती की सुविधा।

पता - मानीकलां, जौनपुर **9451610571, 7380850571**



BAJAJ



ए.एम. बजाज

मो अब्दुल गान्जि | 8 मानी कलां, मुरेन रोड, जौनपुर- 222139 | 9621032024, 9651316060, 9621713686

मां विंध्यवासिनी देवी मंदिर की कलश यात्रा में उमड़ा श्रद्धालुओं का जनसैलाब



भारत भाई शुक्ला के नेतृत्व में धार्मिक आयोजन ने दिया आस्था, भक्ति और सामाजिक एकता का संदेश

मुंबई (उत्तरशक्ति)। शारदीय नवरात्र के पावन अवसर पर मां विंध्यवासिनी देवी मंदिर द्वारा संचालित विंध्यवासिनी देवी सेवा ट्रस्ट के तत्वावधान में भव्य कलश यात्रा का आयोजन श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ किया गया। इस धार्मिक आयोजन में बड़ी संख्या में महिलाओं, माताओं-बहनों तथा श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर मां विंध्यवासिनी देवी के प्रति

भाजपा प्रवक्ता प्रो. दयानंद तिवारी तथा साउथ इंडियन भाजपा सेल के अध्यक्ष मुरुगन सेल्वन प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। अतिथियों ने नारियल फोड़कर कलश यात्रा का शुभारंभ किया। धार्मिक परंपराओं के अनुरूप शुरू हुई इस यात्रा में श्रद्धालुओं ने पूरे उत्साह और श्रद्धाभाव के साथ सहभागिता निभाई।

महिलाओं की भारी भागीदारी ने बढ़ाई कलश यात्रा की भव्यता

कलश यात्रा का प्रमुख आकर्षण बड़ी संख्या में महिलाओं की सहभागिता रही। पारंपरिक धार्मिक भावनाओं के साथ महिलाओं ने सिर पर कलश धारण

कर यात्रा में भाग लिया। श्रद्धा और भक्ति से ओतप्रोत इस यात्रा में शामिल श्रद्धालुओं ने धार्मिक वातावरण को और भी जीवंत बना दिया। यात्रा जिस मार्ग से होकर गुजरी, वहां भक्तिमय माहौल देखने को मिला। नवरात्र के पावन

अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम ने भारतीय धार्मिक परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति लोगों की आस्था को प्रदर्शित किया।

एंटोप हिल से शुरू हुई कलश यात्रा विभिन्न मार्गों से होते हुए सायन कोलीवाड़ा स्थित मां विंध्यवासिनी देवी मंदिर पहुंची। मंदिर पहुंचने पर कलश में लाए गए जल को अर्पित किया गया। इसके साथ ही धार्मिक विधि-विधान के

अनुसार कलश यात्रा का समापन हुआ। पूरे आयोजन में श्रद्धालुओं की सक्रिय भागीदारी और धार्मिक उत्साह विशेष रूप से देखने को मिला।

भारत भाई शुक्ला ने जताया सभी श्रद्धालुओं का आभार

इस भव्य धार्मिक आयोजन में मंदिर की ट्रस्टी एवं कार्यक्रम के आयोजक भारत भाई शुक्ला की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। उनके आयोजन एवं समन्वय से जुड़े इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर धार्मिक आयोजन को सफल बनाने में सहयोग दिया। भारत भाई शुक्ला ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों, श्रद्धालुओं, माताओं-

बहनों तथा आयोजन में सहयोग करने वाले सभी लोगों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया।

भारत भाई शुक्ला ने कहा कि मां विंध्यवासिनी देवी की कृपा और श्रद्धालुओं के सहयोग से इस प्रकार के धार्मिक आयोजन समाज में आस्था, संस्कार और आपसी सद्भाव को मजबूत करते हैं। उन्होंने सभी के सहयोग एवं सहभागिता के लिए धन्यवाद देते हुए मां विंध्यवासिनी देवी से प्रार्थना की कि सभी के जीवन में सुख, शांति, स्वास्थ्य और समृद्धि बनी रहे। साथ ही समाज में प्रेम, सद्भाव और एकता का वातावरण निर्धार कायम रहे।

उन्होंने धार्मिक परंपराओं को आगे बढ़ाने और नई पीढ़ी को अपनी

संस्कृति एवं संस्कारों से जोड़ने में ऐसे आयोजनों के महत्व को भी रेखांकित किया। नवरात्र जैसे पावन पर्व पर सामूहिक रूप से आयोजित धार्मिक कार्यक्रम लोगों को एक साथ जोड़ने तथा सामाजिक सौहार्द को प्रोत्साहित करने का महत्वपूर्ण माध्यम बनते हैं।

धार्मिक आस्था के साथ सामाजिक एकता का संदेश

शारदीय नवरात्र के अवसर पर आयोजित मां विंध्यवासिनी देवी की यह भव्य कलश यात्रा केवल एक धार्मिक कार्यक्रम तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसने समाज में श्रद्धा, भक्ति, संस्कृतिक चेतना और सामाजिक एकता का संदेश भी दिया। महिलाओं एवं श्रद्धालुओं की बड़ी

संख्या में उपस्थिति ने आयोजन की महत्ता को और बढ़ाया। विंध्यवासिनी देवी सेवा ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम ने क्षेत्र के श्रद्धालुओं को धार्मिक परंपराओं से जुड़ने का अवसर प्रदान किया। मां विंध्यवासिनी देवी के प्रति श्रद्धा और सामूहिक सहभागिता के साथ संपन्न हुई इस कलश यात्रा ने नवरात्र के पावन वातावरण को और अधिक भक्तिमय बना दिया। भारत भाई शुक्ला ने सभी श्रद्धालुओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कामना की कि मां विंध्यवासिनी देवी का आशीर्वाद सभी पर बनी रहे और समाज में सुख, शांति, समृद्धि तथा भाईचारे की भावना निरंतर मजबूत होती रहे।

प्रबंधन शिक्षा में अकसे बड़े बदलाव की उम्मीद, 73 प्रतिशत बी-स्कूल प्रमुखों ने जताई राय



मुंबई। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और तकनीकी बदलावों के कारण प्रबंधन शिक्षा में बड़े परिवर्तन की संभावना है। BITS स्कूल ऑफ मैनेजमेंट (BITSom) द्वारा आयोजित पहली ऑल इंडिया डीन कॉन्फ्रेंस में जोर एफएम और BITSom ग्लोबल पर्सपेक्टिव सर्वे रिपोर्ट के अनुसार, भारत के 73% बिजनेस स्कूल प्रमुखों का मानना है कि अकप्रबंधन शिक्षा को बड़े स्तर पर बदल देगा। सर्वेक्षण में यह भी सामने आया कि बदलाव की उम्मीद के बावजूद कई संस्थान अभी

गोपनीयता और नियमन को 41% प्रतिभागियों ने बड़ी चुनौती माना। सम्मेलन में विशेषज्ञों ने कहा कि बिजनेस स्कूलों को अकके साथ-साथ छात्रों में आलोचनात्मक सोच, नैतिक निर्णय क्षमता, सहानुभूति और रणनीतिक नेतृत्व जैसे मानवीय गुण विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए। पारंपरिक व्याख्यानों के बजाय प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा, उद्योग की वास्तविक समस्याओं पर काम और अंतरराष्ट्रीय शोध सहयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया। BITSom के डीन प्रो. सरवनन केसवन सहित भारत और विदेश के प्रमुख शिक्षाविदों ने प्रबंधन शिक्षा को अधिक प्रासंगिक, व्यावहारिक और भविष्य के लिए तैयार बनाने पर विचार साझा किए। सम्मेलन में इस बात पर सहमति बनी कि अकके दौर में बिजनेस स्कूलों की सफलता तकनीक, मानवीय कौशल, शोध और उद्योग के साथ मजबूत साझेदारी के संतुलन पर निर्भर करेगी।

साइकिल के पहियों पर सवार हुआ नशामुक्त भारत का संकल्प

-सुरेश गांधी
वाराणसी। गंगा की लहरों के सानिध्य में रविवार की सुबह काशी ने सेहत, अनुशासन और नशामुक्ति का ऐसा संदेश दिया, जिसकी गूंज साइकिल के पहियों के साथ सड़कों तक पहुंची। नमो घाट पर उगती सुबह की पहली किरणों के बीच कहीं ध्यान के जरिए मन को साधने की पहल हुई तो कहीं कथक की थाप और जुम्बा की लय पर शरीर को सक्रिय रखने का संदेश दिया गया। इसके बाद साइकिलों का कावा निकला तो उसका मकसद केवल कुछ किमी की दूरी तय करना नहीं, बल्कि युवाओं को नशे से दूर रखकर स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना था।

केंद्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने रविवार को वाराणसी में हॉफिट इंडिया सडेंज ऑन साइकिलह के 94वें संस्करण का नेतृत्व किया। नमो घाट से संपूर्णानंद संस्कृत निवेशविद्यालय तक करीब 5.5 किमी की साइकिल रैली में 500 से अधिक साइकिल चालकों ने हिस्सा लिया, जबकि पूरे आयोजन में एक हजार से अधिक प्रतिभागियों की भागीदारी रही। हॉफिटसित भारत के लिए नशामुक्त युवाह्व की थीम पर आयोजित कार्यक्रम में युवाओं ने नशे से दूरी और स्वस्थ जीवन के प्रति प्रतिबद्धता जताई। इस अवसर पर 2026 आईसी-नागोया एशियाई खेलों के पदक विजेता प्राची चौधरी, पारुल चौधरी, जय कुमार और राज कुमार मूल भी मौजूद रहे। कार्यक्रम का प्रारंभ सड़क था-राष्ट्र की प्रगति के लिए युवाओं का स्वस्थ होना जरूरी है। शरीर की मजबूती, मन का संतुलन और नशे से दूरी केवल व्यक्तिगत जीवन की जरूरत नहीं, बल्कि एक सशक्त समाज की बुनियाद भी है। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह छह बजे नमो घाट पर ध्यान सत्र से



हुई। हैदराबाद के कान्हा शांतिवन स्थित हार्टफुलनेस इंस्टीट्यूट की युवा कार्यक्रम निदेशक डॉ. निवेदिता श्रेयांस ने इसका नेतृत्व किया। उन्होंने शारीरिक फिटनेस के साथ मानसिक स्वास्थ्य के महत्व पर जोर दिया। ध्यान के माध्यम से प्रतिभागियों को यह संदेश दिया गया कि स्वस्थ जीवन के लिए केवल शरीर को सक्रिय रखना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि मन को शांति, संतुलित और तनावमुक्त रखना भी जरूरी है। ध्यान सत्र के बाद भारतीय संस्कृति और आधुनिक फिटनेस का सुंदर मेल देखने को मिला। कथक को प्रस्तुति ने सांस्कृतिक विरासत की छटा बिखेरी तो जुम्बा सत्र ने प्रतिभागियों में नई ऊर्जा भर दी। इन गतिविधियों ने आयोजन को महज औपचारिक कार्यक्रम बनने से आगे बढ़ाकर सामूहिक सहभागिता और उत्साह का मंच बना दिया। इस क्रम में केंद्रीय मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने युवाओं को संबोधित करते हुए फिटनेस को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का आह्वान किया। नशे के दुष्परिणामों से समाज को बचाने की जरूरत पर जोर देते हुए उन्होंने प्रतिभागियों के साथ हनशामुक्त भारतह की शपथ ली। इस दौरान नशीले पदार्थों के दुरुपयोग के खिलाफ सामूहिक प्रयास और नशामुक्त पीढ़ी तैयार करने का संकल्प दोहराया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह छह बजे नमो घाट पर ध्यान सत्र से

विश्वविद्यालय तक साइकिल रैली का नेतृत्व किया। साइकिलों के इस कारवां ने वाराणसी की सड़कों पर हॉफिटसित भारत के लिए नशामुक्त युवाह्व का संदेश पहुंचाया। इस रैली की खासियत यह रही कि इसमें फिटनेस को केवल व्यक्तिगत अभ्यास के रूप में नहीं, बल्कि सामूहिक सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में प्रस्तुत किया गया। साइकिल चालना एक ऐसी गतिविधि है, जिसे आम लोग भी अपनी दिनचर्या में सहजता से शामिल कर सकते हैं। नियमित साइकिलिंग शरीर को सक्रिय रखने और सहनशक्ति बढ़ाने में मदद करती है। जब ऐसी गतिविधियां सामूहिक आयोजन का रूप लेती हैं, तो उनका संदेश लोगों तक अधिक प्रभावी ढंग से पहुंचता है। नशामुक्ति का संकल्प इस आयोजन का केंद्रीय भाव रहा। युवाओं को नशीले पदार्थों से दूर रखने के लिए जागरूकता के साथ सकारात्मक विकल्प उपलब्ध करना भी महत्वपूर्ण है। खेल, व्यायाम और रचनात्मक गतिविधियां युवाओं को अपनी ऊर्जा सही दिशा में लगाने तथा अनुशासन विकसित करने का अवसर देती हैं। इसी सोच को साइकिल रैली के जरिए जनभागीदारी से जोड़ा गया। कार्यक्रम में एशियाई खेलों के पदक विजेताओं को सम्मानित कर भारतीय खेल उपलब्धियों का उत्सव मनाया गया। खिलाड़ियों की मौजूदगी ने युवाओं को नशीले पदार्थों से दूर रहने और स्वस्थ जीवनशैली

अपनाने के लिए प्रेरित किया। महिलाओं की 400 मीटर दौड़ में कथक पदक विजेता प्राची चौधरी को सम्मानित किया गया। वहीं, पारुल चौधरी ने महिलाओं की 3000 मीटर स्टीपलचेज और 5000 मीटर दौड़ में कांस्य पदक जीतकर अपनी उपलब्धियों से देश का गौरव बढ़ाया। जय कुमार को मिश्रित 4400 मीटर रिले में रजत पदक और पुरुषों की 4400 मीटर रिले में कांस्य पदक जीतने वाली टीमों में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। भारतीय पुरुष हॉकी टीम के सदस्य राज कुमार पाल को स्वर्ण पदक विजेता टीम का हिस्सा बनने के लिए सम्मान मिला। इन खिलाड़ियों की उपलब्धियां बताती हैं कि खेलों में सफलता किसी एक दिन के प्रयास का परिणाम नहीं होती। इसके पीछे वर्षों का अभ्यास, कठिन परिश्रम, अनुशासन, धैर्य और लक्ष्य के प्रति अटूट समर्पण होता है। खिलाड़ियों की मौजूदगी ने आयोजन को प्रेरणा का ऐसा मंच बनाया, जहां युवा खेलों को केवल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि जीवन को बेहतर बनाने के माध्यम के रूप में देख सकते हैं। फिट इंडिया सडेंज ऑन साइकिल के 94वें संस्करण ने फिटनेस की व्यापक जागरूकता को सामने रखा। स्वस्थ रहने का अर्थ केवल शारीरिक गतिविधियों तक सीमित नहीं है। मानसिक स्वास्थ्य, संतुलित दिनचर्या, अनुशासन और जिम्मेदार जीवनशैली भी इसके अभिन्न अंग हैं। कार्यक्रम में ध्यान, कथक, जुम्बा और साइकिलिंग को एक साथ शामिल करना इसी समग्र सोच के दर्शाती है। ध्यान ने मानसिक संतुलन का संदेश दिया, सांस्कृतिक प्रस्तुति ने सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा दिया और साइकिल रैली ने सक्रिय जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा दी।

नशामुक्त भारत की शपथ ने इन

सभी गतिविधियों को एक साथ उद्देश्य से जोड़ दिया। ऐसे आयोजनों की सार्थकता तभी पूरी होती है, जब उनका संदेश कार्यक्रम स्थल से निकलकर लोगों की दिनचर्या में जगह बनाए। युवाओं के लिए नियमित व्यायाम, खेलों में भागीदारी और नशीले पदार्थों से दूरी स्वस्थ भविष्य की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं। परिदार, शैक्षणिक संस्थान और सामाजिक संगठन भी इस दिशा में सकारात्मक वातावरण बनाने में योगदान दे सकते हैं।

विकसित भारत की बुनियाद है स्वस्थ युवा शक्ति

भारत की युवा आबादी देश की सबसे बड़ी ताकतों में से एक है। इस ताकत को राष्ट्र निर्माण में प्रभावी भूमिका निभाने के लिए स्वस्थ, जागरूक और अनुशासित बनाना जरूरी है। नशामुक्ति का संदेश इसी व्यापक लक्ष्य से जुड़ा है। युवाओं को अपनी क्षमता पहचानने, खेलों में आगे बढ़ने और स्वास्थ्य के प्रति जिम्मेदार बनने के लिए प्रेरित करना समय की आवश्यकता है। वाराणसी में आयोजित फिट इंडिया सडेंज ऑन साइकिल ने इसी सोच को केंद्र में रखा। गंगा किनारे ध्यान से शुरू हुई सुबह साइकिल रैली के साथ जनजागरण में बदल गई। एशियाई खेलों के पदक विजेताओं की मौजूदगी ने खेलों के प्रति आकर्षण बढ़ाया तो नशामुक्त भारत की शपथ ने सामाजिक प्रतिबद्धता को मजबूत किया। काशी से निकला यह संदेश स्पष्ट है-विकसित भारत का सपना केवल स्वास्थ्य और आर्थिक उपलब्धियों से पूरा नहीं होगा। उसके लिए स्वस्थ शरीर, संतुलित मन और नशे से मुक्त युवा शक्ति भी चाहिए। साइकिल पहियों पर आगे बढ़ा यह संकल्प युवाओं को अपनी सेहत की जिम्मेदारी लेने, सकारात्मक आदतें अपनाने और राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य में सहभागी बनने की प्रेरणा देता है।

पार्क साइट की रामलीला का भव्य शुभारंभ



-आदेश मिश्र
मुंबई के विक्रोली पार्क साइट स्थित छत्रपति श्री शिवाजी महाराज मैदान में श्री रामलीला उत्सव समिति के तत्वावधान में आयोजित 60वें भव्य रामलीला महोत्सव का शुभारंभ धूमधाम से किया गया। बालाजी मंदिर के महंत श्री धरणीधराचार्य जी महाराज जी के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलित कर श्री रामचरित मानस पर माल्यार्पण कर विधिवत पूजन के साथ महाराज जी ने फीता काटकर रामलीला महोत्सव का उद्घाटन किया। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष प्रभाकर चंद्रशेखर शुक्ल ने मंचासीन महंत श्री धरणीधराचार्य जी महाराज

एवं मुंबई भाजपा महामंत्री व श्री सिद्धिविनायक मंदिर के कोषाध्यक्ष आचार्य पवन त्रिपाठी को श्रीरामनामनी शाल, श्रीफल और पुष्पगुच्छ भेंटकर उत्सव समिति के तत्वावधान में मुंबई हिंदी पत्रकार संघ के अध्यक्ष आदित्य दुबे, भाजपा उत्तर भारतीय का.संजीव त्रिपाठी का भी स्वागत किया गया। रामलीला महोत्सव में उत्तर प्रदेश के मथुरा स्थित ब्रज धाम से पधारे प्रतीक रामायण प्रचारक रामलीला मंडल के कुशल कलाकारों द्वारा भव्य रामलीला का मंचन किया जा रहा है। रविवार को नारद मोह इत्यादि का मंचन कलाकारों की प्रस्तुतियों के माध्यम

से भगवान श्रीराम के जीवन से जुड़े प्रसंगों को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में समिति के सचिव दिवाकर मिश्रा, कोषाध्यक्ष एस.पी. सिंह, कार्याध्यक्ष रामबिलास पाठक ,संगठन मंत्री आदेश मिश्र, दलजीत पांडेय, प्रवक्ता राजेश सिंह,सर्वदेव पांडेय, बाबुलनाथ तिवारी,भोलानाथ मिश्रा, अरविंद सी शुक्ला, अजय पांडेय, अरविंद शुक्ल, दिनेश सिंह, अवधेश तिवारी, प्रशांत शुक्ल,प्रमुख राहुल शुक्ल,शुभम सिंह, रामवीर्य शर्मा,संदीप दुबे, नीरज शुक्ला अनिलेश मिश्रा, अशोक पाठक अशोक गुप्ता, राजेश सिंह,प्रेम तिवारी, कोशल मिश्रा, राजेश पांडेय, राकेश दुबे,हीरा यादव,प्रथम शुक्ला, प्रमुख शुक्ल सहित समिति के अन्य पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे। समिति के संगठन मंत्री एवं मीडिया प्रभारी आदेश कुमार मिश्र ने समस्त श्रद्धालुओं और क्षेत्रवासियों से अपील की कि वे अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर रामलीला महोत्सव की शोभा बढ़ाएं और भगवान श्रीराम के आदर्शों से प्रेरणा लें। उन्होंने बताया कि आयोजन को सफल बनाने के लिए समिति के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य सक्रिय रूप से जुटे हुए हैं।

ठाणे शहर पुलिस आयुक्तालय और पीरामल फाइनेंस की संयुक्त पहल से साइबर अपराध जागरूकता अभियान की शुरुआत

ठाणे। भारतीय साइबर समन्वय के मार्गदर्शन में अक्टूबर 2026 को साइबर जागरूकता माह के रूप में मनाया जा रहा है। इसके अंतर्गत स्कूलों, कॉलेजों, वरिष्ठ नागरिक संघों, सोसायटियों और सार्वजनिक स्थानों पर साइबर जागरूकता कार्याशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। इस अभियान के तहत साइबर अपराध जागरूकता का आधारित रील प्रतियोगिता, नवरात्रि मंडल सजावट प्रतियोगिता तथा 31 अक्टूबर 2026 को साइकिल रैली का आयोजन भी किया जाएगा।

इसी पहल के अंतर्गत ठाणे शहर पुलिस आयुक्तालय और पीरामल फाइनेंस लिमिटेड, जो एक गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी है, के सहयोग से ह्रासबकी नीयत साफ नहीं होती नैतिक साइबर अपराध जागरूकता

अभियान की शुरुआत की गई है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य बढ़ते साइबर अपराधों से नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। इस अभियान के माध्यम से नागरिकों को डिजिटल दुनिया में सुरक्षित रहने के लिए आवश्यक जानकारी और जागरूकता प्रदान की जाएगी। फिशिंग, ओटीपी धोखाधड़ी, एपीके लिंक के माध्यम से होने वाली ठगी, शेयर ट्रेडिंग से संबंधित यूपीआई धोखाधड़ी, फर्जी लोन ऐप्स, केवाईसी धोखाधड़ी और सोशल मीडिया, घोटालों जैसे साइबर खतरों के बारे में नागरिकों को जागरूक किया जाएगा। आर्थिक नुकसान से बचने के लिए सुरक्षित डिजिटल तरीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य है। यह अभियान पूरे महानगर चलेगा और ठाणे, कल्याण-डोंबिवली, भिवंडी,

बदलापुर तथा उल्हासनगर के विभिन्न क्षेत्रों में संचालित किया जाएगा। इसमें स्कूलों और कॉलेजों में जागरूकता कार्यक्रम, वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष मार्गदर्शन सत्र, नुकवड नाटक तथा डिजिटल माध्यमों से जागरूकता फैलाने जैसी विभिन्न गतिविधियां शामिल होंगी।

यह पहल ठाणे के पुलिस आयुक्त आशुतोष डुंबरे की संकल्पना पर आधारित है। कार्यक्रम में पीरामल फाइनेंस लिमिटेड के हेड ऑफ कस्टमर एक्सपीरियंस श्री राज नायर, ठाणे के पुलिस सह आयुक्त ज्ञानेश्वर चव्हाण, पुलिस सह आयुक्त (अपराध) पंजाबराव उगले, आर्थिक अपराध शाखा एवं साइबर सेल, ठाणे के पुलिस उपायुक्त पराग मणेर तथा सहायक पुलिस आयुक्त, आर्थिक अपराध शाखा श्रीमती नीलिमा पवार उपस्थित थे।

एआई के दौर में और कीमती होंगी मानवीय भावनाएं



मुंबई। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) तेजी से लोगों के काम करने, कुछ नया रचने, संवाद करने और फैसले लेने के तरीके बदल रहा है। ऐसे में मेशा ने ह्यूमन एडवांटेज नाम से एक विशेष आयोजन किया। इसमें अलग-अलग क्षेत्रों के लीडर्स और बदलाव लाने वाले लोग एक बुनियादी सवाल पर मंथन करने के लिए एकत्र हुए: एआई जैसे-जैसे ज्यादा सक्षम होता जा रहा है, इसान होने की कौन-सी बातें और ज्यादा कीमती होती जा रही हैं? कारोबार, टेक्नोलॉजी, हेल्थकेयर, मनोविज्ञान, शिक्षा, उद्यमिता और क्रिएटिव समुदाय से जुड़े लोगों को एक साथ लाकर इस आयोजन में उन इंसानी क्षमताओं पर विस्तार से चर्चा की गई, जो एआई के साथ आगे बढ़ने के लिए एडवांटेज हैं।

होंगी। इन्हें भावनात्मक सेहत, लचीलापन, आपसी जुड़ाव, रचनात्मकता और लीडरशिप शामिल हैं। यह आयोजन मानसिक स्वास्थ्य पर दुनिया भर में चल रही चर्चा के लिहाज से एक अहम मौके पर हुआ। इस साल वर्ल्ड मेटल हेल्थ डे की थीम आपबीती सुनी जाए: असली आवाजें, असली बदलाव है। यह थीम कहती है कि जिन लोगों ने मानसिक स्वास्थ्य की चुनौतियों को खुद जिया है, उन्हें इससे जुड़ी नीतियों, सेवाओं और फैसलों को आकार देने में सार्थक भूमिका मिलनी चाहिए। ह्यूमन एडवांटेज ने इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए एक ऐसा मंच तैयार किया, जहां अलग-अलग अनुभव और नजरिए एक साथ आ सके। यहां टेक्नोलॉजी पर चर्चा के साथ-साथ यह भी परखा गया कि इसका इंसानी जुड़ाव, भावनात्मक सेहत, लचीलापन, रचनात्मकता, लीडरशिप और हमारे जीने और काम करने के तरीके पर क्या असर पड़ रहा है। यह विशेष कार्यक्रम की न परस्पर जुड़े प्रमुख क्षमताओं में विभाजित था। इसके पहले चरण में मशीनों के अधिक सक्षम होने के साथ इंसानी संभावनाओं को नए तौर से समझने पर जोर दिया गया, जिसमें इस बात का विश्लेषण हुआ कि तकनीक के विस्तार के साथ हमारे भीतर की कौन-सी मानवीय बातें अधिक मूल्यवान हो जाती हैं और हम इस परिवर्तन के दौर से कैसे गुजरते हैं।